वृद्धि और विकास
(GROWTH AND DEVELOPMENT)

किसी भी प्राणी के जीवन का आरम्भ जन्म के बाद नहीं, अपितु जन्म से पूर्व गर्भधान के समय ही हो जाता है। शिशु जन्म तो उसके विकास क्रम में घटित होने वाला एक स्वाभाविक परिवर्तन है जिसके द्वारा शिशु आन्तरिक वातावरण से निकलकर बाह्य वातावरण के सम्पर्क में आता है।

वृद्धि और विकास का अर्थ

* वृद्धि (Growth) — वृद्धि का अर्थ है "बढ़ना" या फैलना। अतः प्राणी के आन्तरिक और बाह्य अंगों का बढ़ना वृद्धि कहलाता है। वृद्धि शारीरिक रचना और शारीरिक परिवर्तनों की ओर संकेत करती है।

* विकास (Development) — विकास एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर जीवनपर्यन्त तक अविराम गति से चलती रहती है। विकास केवल शारीरिक वृद्धि की ओर ही संकेत नहीं करता वरन इसके अन्तर्गत वे सभी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक परिवर्तन सम्मिलित रहते हैं।

Scanned with CamScanner

वृद्धि और विकास में अन्तर

वृद्धि	विकास
i) वृद्धि गर्भावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक चलती है	i) विकास गर्भाधान से लेकर जीवनपर्यन्त तक चलती है।
ii) वृद्धि में होने वाले परिवर्तन शारीरिक होते है	ii) विकास में होने वाले परिवर्तन शारीरिक के साथ-2 मानसिक, सामाजिक व संवेगात्मक भी होते है
iii) प्राणी में वृद्धि बाद में होती है।	iii) विकास पहले होते है।
iv) वृद्धि द्वारा क्रम प्राणी को वृद्धावस्था की ओर ले जाता है	iv) विकास क्रम प्राणी को परिपक्वावस्था प्रदान करता है.

विकास के रूप

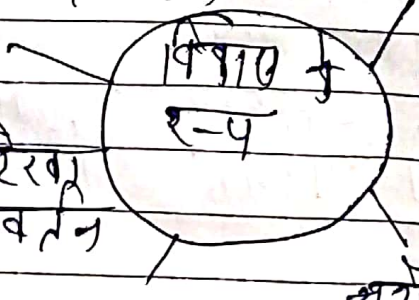

अनुपात में परिवर्तन

आकार में परिवर्तन

पुरानी रूपरेखा में परिवर्तन

नये गुणों की प्राप्ति

विकास क्रम में परिवर्तनों का महत्व

Date :
Page No. :

विकास के सिद्धान्त

i) विकास एक निश्चित प्रतिरूप होता होता है।

ii) विकास सामान्य से विशेष की ओर होता है.

iii) विकास अवस्थाओं के अनुसार होता है.

iv) विकास में व्यक्तिगत विभेद रहते हैं

v) विकास की गति में तीव्रता व मन्दता पायी जाती है.

विकास को प्रभावित करने वाले तत्व

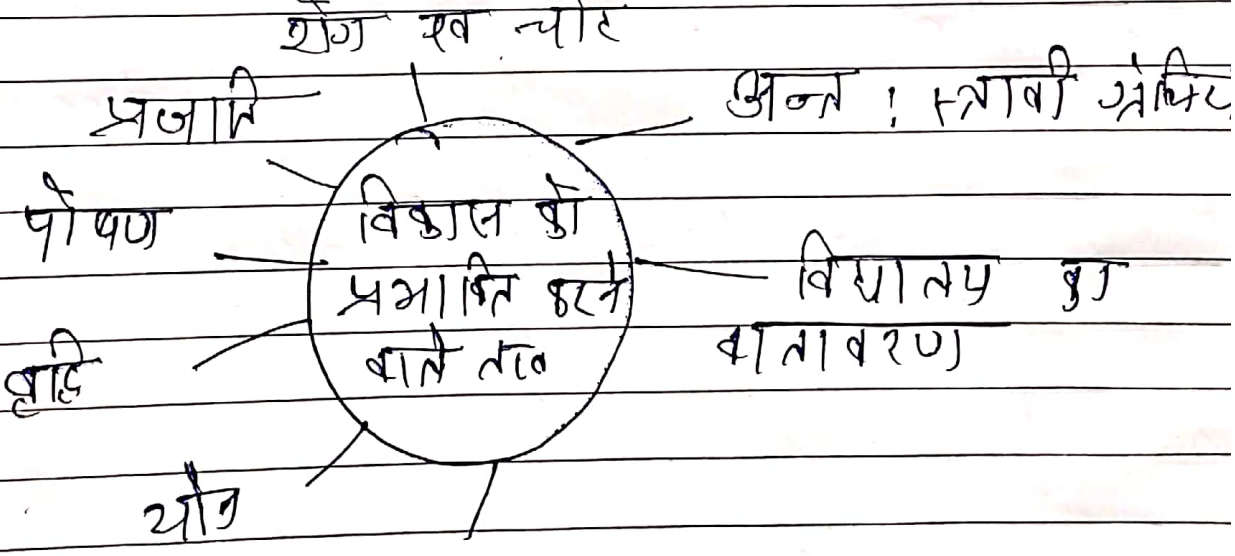

एवं वातावरण

Scanned with CamScanner